Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 7 ~ Issue 2 (2019)pp.:57-59
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

चौरी–चौरा प्रकरण और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की घटनाओं के अंतरसम्बन्धों की वैचारिक पृष्ठभूमि

अनुराधा सिंह*
पी–एच0डी0

सारांश
असहयोग आंदोलन के समय 4 फरवरी 1922 ई0 को गोरखपुर के चौरी– चौरा नामक पुलिस थाने में किसानों की गुस्साई भीड़ ने आग लगा दी थी। इस घटना में 23 पुलिस वालों की जल कर मौत हो गई थी। यह घटना निहत्थे, शांतिपूर्ण किसानों को पुलिस द्वारा उकसाने के कारण हुई थी। इस हिंसा कि घटना के बाद गांधी जी द्वारा 12 फरवरी 1922 ई0 को असहयोग आंदोलन वापस ले लिया गया था। गांधी के इस फैसले को लेकर स्वतंत्रता आंदोलन में संलग्न लोगों का एक बड़ा समूह नाराज हो गया। इसके बावजूद गांधी अपनी मान्यताओं और वैचारिक प्रतिबद्धता के साथ अपने निर्णय पर अडिग रहें। गांधी का मानना था अगर यह आंदोलन वापस नहीं लिया जाता तो दूसरी जगहों पर ऐसी अन्य घटनाएँ होती। गांधी ने साफ तौर पर इस घटना के लिये स्थानिय पुलिस प्रशासन को जिम्मेदार बताया और कहा अगर किसानों की भीड़ ने इस प्रकार का कदम उठाया था तो उन्हें पुलिस प्रशासन द्वारा उकसाया गया था। इसके साथ ही उन्होंने दूसरी तरफ इस घटना में संलिप्त लोगों को अपने आपको पुलिस के हवाले करने को कहा क्योंकि उन्होंने अपराध किया था। असहयोग आंदोलन गांधी व चौरी–चौरा प्रकरण के विषय में तमाम वैचारिक संदर्भ व व्याख्या जनित प्रतिबद्धताएँ भारतीय इतिहास लेखन का सदैव से आकर्षण का केन्द्र रही हैं। ऐसे में आवश्यक है कि हम राष्ट्रीय आंदोलन की परिधि में रह कर इस सम्पूर्ण घटना क्रम के वैचारिक स्वरूप से जुड़े मनतव्यों को विश्लेषित करते हुए इतिहास लेखन के बहाने चौरी–चौरा प्रकरण से जुड़ी घटनाओं के वस्तुनिष्ठता को जानने का प्रयास करें। यह शोध–पत्र इसी अध्ययन क्रम की एक कड़ी है।

बीज शब्द *– चौरी–चौरा, असहयोग, काग्रेस, गांधी, अहिंसा, किसान।*

4 फरवरी 1922 ई0 को दोपहर बाद 4 बजे गोरखपुर, उत्तर प्रदेश के चौरी–चौरा थाने में आक्रोशित किसानों द्वारा थाने में आग लगाकर 23 पुलिस वालों को जलाने की घटना भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में एक ऐसी घटना है जो आज तक इतिहास लेखन के बहाने विचारों के निमित्त अलग–अलग वैचारिक व्याख्या का पर्याय बनी हुई है। कुछ एक इतिहासकार या संख्या 23 के बजाय 24 होना भी स्वीकारते हैं।[1]

वस्तुतः यह घटना इसलिए महत्वपूर्ण है कि इस घटना से दुःखी होकर गांधी जी ने 12 फरवरी 1922 ई0 को असहयोग आंदोलन वापस ले लिया था।[2] सम्भवतः यही वह कारण था जिसने इस घटना की अच्छाई–बुराई और इसके तात्कालिक और दीर्घकालिक प्रभावों पर कम और अधिक आवश्यकता के अनुरूप चर्चा करने के लिये इतिहासकारों को प्रवृत्त किया। वास्तव में यह घटना कांग्रेस, गांधी और असहयोग आंदोलन से ऐसे जुड़ी कि इतिहासकार आज तक समयकाल व अन्य महत्वपूर्ण कारणों के अनुसार इससे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर पड़ने वाले प्रभावों की व्याख्या अलग–अलग ढंग से करते रहे हैं। इस विषय में यह संदर्भ और भी महत्वपूर्ण है कि चौरी–चौरा घटना क्रम के शहीदों का संदर्भ उहापोह लाने वाला है। सम्भवतः यह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक मात्र इतिहास की घटना है जिसमें ब्रिटिश सरकार से सजा पाये हुए लोग और जनता के गुस्से का शिकार बनने वाले पुलिसकर्मी दोनों ही शहीद माने जाते रहे हैं। इसके अलावा ऐसे और भी बहुत से संदर्भ इस घटना क्रम के साथ जुड़े हुए हैं। ये सभी संदर्भ इतिहास लेखन की परम्परा में व्याख्या और विश्लेषण के निमित्त उपयोगी रहे हैं। विपिन चन्द्र, शाहिद अमीन व अब सुभाष चन्द्र कुशवाहा जैसे प्रमुख इतिहासकारों द्वारा समय– समय पर स्रोतों संदर्भों के अनुसार इस घटना क्रम के प्रकृति और व्याख्या संदर्भों को समृद्ध किया गया है।

इस विषय में यह महत्वपूर्ण होगा कि हम सभी इस घटना क्रम के निमित्त अब तक की सभी मान्यताओं और ऐतिहासिक व्याख्याओं के बहाने चौरी–चौरा के घटना क्रम का भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करें। यह आवश्यक भी है क्योंकि निरपेक्ष इतिहास लेखन के दृष्टिकोण से इस घटना के प्रभावों को वस्तुनिष्ठ रूप से जानना आवश्यक है। ऐसे में जब हम चौरी–चौरा घटना क्रम के प्रभावों को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ में देखते हैं तो जो घटना–वृत स्पष्ट होता है उसके प्रभावों को विस्तृत ढंग से जानने व समझने की जरूरत जान पड़ती है।

गांधी जी द्वारा चौरी–चौरा की घटना के पश्चात अचानक से असहयोग आंदोलन को स्थगित कर दिया गया। गांधी जी के निर्णय ने एक विवाद खड़ा कर दिया एक ऐसा विवाद, जिस पर आज भी संगोष्ठियों, सम्मेलनों में बहस होती है। इतिहास के किताबों में इस विषय पर बहुत कुछ लिखा गया है और आज भी लिखा जा रहा है।[3] गांधी जी के इस स्थगन प्रस्ताव के बाद कांग्रेस व अन्य दलों के नेताओं द्वारा जो प्रतिक्रिया की गई वह अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। हमें इन प्रतिक्रियाओं के आलोप में इस सम्पूर्ण घटना क्रम को देखना व समझना चाहिए। सुभाष चन्द्र बोस ने गांधी जी के इस आदेश का विरोध करते हुए यह कहा था कि *''राष्ट्रीय आंदोलन जब अपने पूर्णता के तरफ है और जनता का उत्साह चरम सीमा पर है तब इसे वापस लौटाने का आदेश देना दुर्भाग्यपूर्ण है।''*[4] मोतीलाल नेहरू और लाला लाजपत राय ने एक पत्र लिखकर गांधी जी को सूचित किया और कहा कि ''देश के एक हिस्से में हुए पाप के कारण आपने सम्पूर्ण देश को दण्डित किया है, आंदोलन को वापस लेने का आपका यह कदम अत्यंत ही कठोर है।'' सम्भवतः जवाहर लाल नेहरू एक मात्र शीर्ष नेता थे जो इस आंदोलन को वापिस लेने के संदर्भ में थोड़ा–बहुत गांधी जी के पक्षधर थे।[5] जवाहर लाल नेहरू ने अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा था कि ''अगर असहयोग आंदोलन यदि हिंसात्मक होगा और रक्तपात के मार्ग पर चलेगा तो अंग्रेजी सरकार ही विजयी होगी। गांधी जी द्वारा आंदोलन को स्थगित करने के कारण कांग्रेसी इस कदर नाराज थे कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में गांधी के विरूद्ध एक अविश्वास प्रस्ताव भी लाया गया। इस अविश्वास प्रस्ताव का समर्थन करने वाले नेताओं में डॉ0 मुन्जे व जे0एम0 सेन प्रमुख थे। आंदोलन स्थगित होने के बाद हुई राजनैतिक प्रतिक्रिया के संदर्भ अत्यंत ही महत्वपूर्ण हैं।

* एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, सामाजिक विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी उ0प्र0

यहाँ एक बात स्पष्ट है कि आंदोलन वापस लेने के संदर्भ में सम्भवतः गांधी जी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को पूरी तरह से अपने प्रभाव में नहीं लिया था। आंदोलन के शिखर पर पहुँचने से पहले ही उसे वापस ले लिये जाने पर गांधी जी की आलोचना उनके अपने साथी काग्रेसियों द्वारा तथा खासकर नौजवानों द्वारा हो रही थी।[6] इसके साथ यह भी है कि गांधी जी के नेतृत्व से सम्भवतः पूरी कांग्रेस सहमत नहीं थी। इस पूरे प्रकरण में एक बात और स्पष्ट थी कि इस प्रस्ताव के बाद गांधी जी अपने सैद्धांतिक आदर्शो के निमित्त भले ही मजबूत हुए परन्तु उनकी लोकप्रियता कम हुई। इसके साथ हमको यह भी ध्यान देना होगा कि गांधी चौरी–चौरा की घटन से इस कदर दुःखी थे कि उन्होंने ''चौरी–चौरा का जुर्म'' नाम से एक लेख लिखा और हत्या–पाप के प्रायश्चित के लिए चौरी–चौरा के लोगों को जिम्मेदार बताया।[7]

असहयोग आंदोलन के स्थगित होने के बाद सम्पूर्ण राष्ट्र में चल रहे राष्ट्रीय आंदोलन की घटनाओं में व्यापक बदलाव आ गया। असहयोग के साथ चल रहे खिलाफ़त आंदोलन का सामूहिक उद्देश्य भी फलीभूत नहीं हुआ। यहाँ यह भी महत्वपूर्ण है कि तमाम लोगों में असहयोग आंदोलन के साथ खिलाफ़त आंदोलन के एका पर भी तमाम असहमतियाँ थीं। दोनों आंदोलन दो अलग–अलग प्रकृतियों के थे। इस विषय में यह आवश्यक है कि चौरी–चौरा की घटना के निमित्त इस विशेष संदर्भ को भी पुनः विश्लेषित करने की आवश्यकता है, क्योंकि गोरखपुर का यह इलाका भी खिलाफ़त आंदोलन के प्रभाव में था। असहयोग आंदोलन के विषय में यह स्पष्ट है कि बिना रूके यह आंदोलन जो थोड़े समय और चल गया होता तो सरकार दबाव में आकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को कुछ और वैधानिक अधिकार देने हेतु सहमत हो जाती जो तत्कालिन समय में हो नहीं सका। आंदोलन के स्थगित होने के बाद से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कार्यक्रम नीतिगत ढंग से बदलने लगे थे। इनमें वैचारिक परिवर्तन आ रहे थे। चौरी–चौरा की घटना व असहयोग आंदोलन की वापसी के बाद हम इस विषय में यह मान सकते हैं कि आंदोलन के बाद से हिन्दुस्तान की जनता निडर होने लगी थी। वह सरकार की आज्ञाओं का प्रतिकार करने लगी थी। संयुक्त प्रांत का पूर्वी हिस्सा राष्ट्रीय आंदोलन की घटनाओं के बहाने अब और सक्रिय हो गया था। जनता में राष्ट्रीयता की भावना का विकसित हो रही थी और आम–जनमानस ब्रितानी साम्राज्यवाद के विरूद्ध मुखर होने लगा था। गांधी जी ने यह आंदोलन अहिंसक असहयोग की रणनीति के विफल होने की आशंका से वापिस लिया था। यह बात और थी कि जनता की प्रतिक्रिया से ब्रिटिश प्रशासन हताश था। ब्रिटिश प्रशासन में भय और दहशत का माहौल था। साफ था कि इस वातावरण का फायदा लेकर असहयोग के कार्यकर्ताओं का दमन होना था। गांधी जी के बहाने इस आंदोलन के वापस होने के बाद हुए प्रभावों को समझा जाये तो हमें 23 फरवरी 1922 ई0 को यंग इण्डिया में उनके लिखे गये विवरण को ध्यान में रखना चाहिए कि ''*1920 ई0 से प्रारम्भ यह संघर्ष अंतिम संघर्ष है, निर्णायक संघर्ष है, फैसला होकर रहेगा, चाहे एक महीना लग जाये या कई महीने लग जाये या एक साल लग जाये, चाहे अंग्रेजी हुकूमत उतना ही दमन को जितना उन्होंने 1857 ई0 के विद्रोह के समय किया था, फैसला होकर रहेगा*''[8] वास्तव में गांधी जी का यह कथन उस आम जनमानस की चेतना का प्रतिनिधित्व करता था जो असहयोग की वापसी के बाद अपनी आजादी के लिये और मजबूती से प्रवृत हुई थी। असहयोग वापसी के बाद के प्रभावों के निमित्त हमें इस आंदोलन की पृष्ठभूमि के संदर्भों को और व्याख्यायित करना आवश्यक होगा क्योंकि अब वह समय था जब आम जनमानस में ब्रिटिश शासन व्यवस्था के लिये बची हुई शासन निष्ठा भी समाप्त होने लगी थी।

आम जनता विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करके और स्वदेशी वस्तुओं को अपना कर तथा राष्ट्रीय संस्थाओं को स्थापित करके नये भारत के निर्माण के तरफ प्रवृत हो रही थी। अब स्वतंत्रता आंदोलन के बहाने अलग–अलग सम्प्रदायों और प्रांतो के लोग भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ खड़े हो रहे थे। शायद पहली बार अखिल भारतीय स्तर पर राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन जन आंदोलन की वैचारिकी को प्राप्त कर रहा था। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अब सभी प्रकार के साधनों का शांतिपूर्ण ढंग से प्रयोग करने के लिये प्रवृत थी। कांग्रेस का नेतृत्व अब सक्रिय आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन की नीतियों को अपनाने लगा था। शायद इसी बदलाव के कारण भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में आम जनमानस की भागीदारी बढ़ने लगी थी और शिक्षित तथा मध्यम वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाली कांग्रेस अब जन आंदोलनों के बहाने सामान्य अनपढ़ व गरीब तबके के लोगों में अपना प्रभाव बनाने में सफल हो रही थी। वस्तुतः यह वह आम जन समुदाय था जो कांग्रेस की पढ़ी–लिखी अभिजात्य वर्गीय विचारधारा से अब तक दूर था।

हमें यह ध्यान देना होगा कि असहयोग आंदोलन जरूर स्थगित हो गया था परन्तु राष्ट्रीयता और देश भक्ति की भावना अब और मजबूती से खड़ी होने लगी थी। जनता को इस बात का आभास होने लगा था कि ब्रिटिश शासन अब अपनी अंतिम साँसें गिन रहा है। असहयोग आंदोलन के स्थगित होने के बाद के प्रभावकारी घटना संदर्भों को ध्यान में रखकर इतिहासकार कूपलैण्ड ने यह कहा था कि ''गांधी जी ने असहयोग के बहाने वह किया जो तिलक नहीं कर सके थे। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन को क्रांतिकारी आंदोलन में बदल दिया।'' स्वयं गांधी जी इस कथन से और इसके प्रवृत्ति संदर्भों के बहाने अपने सैद्धांतिक विर्मश साथ असहमत होते पर इस कथन की उपादेयता के आलोप में राष्ट्रीय आंदोलन के बदलते हुए स्वरूप को समझना श्रेयस्कर होगा।

गांधी जी का व्यक्तित्व अब ग्रामीण समुदाय को भी उद्देलित करने लगा था। असहयोग आंदोलन के वापसी के बाद जब गांधी जी को 6 वर्ष का कारावास हो गया तब जरूर कुछ समय के लिये अनिश्चितता और गतिहीनता का माहौल दिखने लगा था। थोड़े समय के लिये कांग्रेस में भी सांगठनिक स्तर पर आपसी फूट देखने को मिली जो स्पष्ट रूप से आंदोलन के वापिस लिये जाने के कारण आम जनमानस के क्षोभ का प्रभाव थी। कांग्रेस नेतृत्व और सांगठनिक रूप से दो धड़ों में बटती दिख रही थी। एक तरफ वे लोग थे जो व्यापक स्तर पर कांग्रेस की नीतियों में बदलाव चाहते थे तो वहीं दूसरे तरफ वे लोग थे जो किसी भी प्रकार के परिवर्तन के विरोधी थे ऐसे में वे लोग जो अभी तक असहयोग आंदोलन के पक्ष में थे और कांउसिलों का बहिष्कार चाहते थे, वे लोग अपरिवर्तनवादी कहलाये तथा जो कांग्रेस के कार्यक्रमों में परिवर्तन के पक्षधर थे वे परिवर्तनवादी कहलाये।

आपसी मन–मुटाव और मतभेदों का यह हाल था कि चितरंजन दास ने कारावास में ही स्वराज्य दल की स्थापना की बात कही और इसके विस्तार की घोषणा भी की। जेल से बाहर आकर उन्होंने पूरे देश का दौरा किया और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की नीतियों में व्यापक बदलाव की बात कही। कांग्रेस के कुछ नेता जैसे हकीम अजमल खाँ, मोतीलाल नेहरू और विट्ठल भाई पटेल जैसे लोगों ने उनका समर्थन किया तो वहीं चक्रवर्ती राजगोपालाचारी तथा डॉ0 मुख्तार अहमद अंसारी जैसे नेताओं ने उनका विरोध भी किया। इस प्रकार 1922 ई0 कांग्रेस में पुनः विभाजन की स्थिति आ गई थी। इस परिस्थिति के आने में भी स्पष्ट रूप से असहयोग का वापिस लिया जाना था। बाद के दिनों में 1922 ई0 में गया में हुए कांग्रेस के अधिवेशन में जब चितरंजन दास सभापति बने तो उन्होंने अपने प्रस्ताव कांग्रेस के सामने रखे लेकिन उनकी पराजय हुई और अपरिवर्तनवादी विजयी रहे। इन परिस्थितियों में मोतीलाल नेहरू ने कांग्रेस के महामंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया। अपने प्रस्ताव के अस्वीकृत होने के बाद चितरंजनदास तथा मोतीलाल नेहरू ने स्वराज दल की स्थापना भी की।[9]

बाद के घटना क्रम में मौलाना अबुल कलाम आजाद ने स्वराजवादियों के साथ मध्यस्तता हेतु और उनके कार्यक्रमों पर विचार करने के लिये एक अधिवेशन बुलाने का प्रस्ताव रखा। इस सम्मेलन में स्वराजवादियों के कार्यक्रमों पर थोड़ी सहमती बनी और बाद में दिल्ली, बम्बई में इसी संदर्भ के निमित्त अन्य दूसरे सम्मेलन भी किये गये। इस सम्पूर्ण घटना–क्रम के निमित्त गांधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन को वापिस लेने का संदर्भ इतिहास लेखन के दृष्टि से महत्वपूर्ण हो जाता है। क्योंकि ये सभी घटनाएँ एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं और इन सबके पीछे असहयोग आंदोलन के वापिस होने के घटना क्रम के बाद की राजनीति जिम्मेदार थी। अपनी बदलाव की गतिविधियों के कारण स्वराजवादी उत्साहित थे और लोकप्रिय होने लगे थे जो तत्कालिन राजनैतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था।

गांधी जी ने इस सम्पूर्ण घटना क्रम पर अपनी राय देते हुए कहा था कि ''हमारे मध्य वास्तविक और मौलिक भेद है। फिर भी मैं स्वराजवादियों के मार्ग में अवरोध अथवा उनके विरूद्ध प्रचार में भाग नहीं ले सकता, लेकिन मैं ऐसी योजना के निमित्त सक्रिय सहायता भी नहीं कर सकता। जिसमें स्वयं मुझे विश्वास नहीं है'' वास्तव में स्वराजवादी, गांधी जी का समर्थन भले ही नहीं पा सके थे पर वे गांधी जी का आशीर्वाद जरूर पा गये थे। स्वराजवादियों ने गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम को अपनाया तथा असहयोग आंदोलन के समर्थकों ने

स्वराजवादियों के कांउसिल प्रवेश के कार्यक्रम को भी। इस प्रकार स्वराज दल कांग्रेस का राजनीतिक अंग बन गया जिससे कांग्रेस पुनः विभाजित होने से बच पायी।

इन सभी संदर्भों का विश्लेषण करने के बाद ऐसा लगता है कि असहयोग आंदोलन आम जनमानस की भागीदारी और एका की दृष्टि से महत्वपूर्ण था परन्तु दुर्भाग्य से हुई चौरी–चौरा की घटना के बाद गांधी जी को न चाहते हुए भी हिंसात्मक गतिविधियों से डर कर असहयोग आंदोलन को वापिस लेना पड़ा। बाद के घटना क्रम के संदर्भ में स्वराज दल की स्थापना और उसके कार्यक्रम पूर्ववर्ती हुए घटनाक्रमों के निमित्त महत्वपूर्ण हैं। इतिहास की दृष्टि से अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ़ प्रतिकार स्वरूप शायद ही कोई दूसरी घटना ऐसी हुई होगी। चौरी–चौरा की घटना के बाद असहयोग आंदोलन स्थगित होने के पश्चात जो राजनैतिक बदलाव आये उनकी प्रकृति में किसान आंदोलनों के निमित्त एक अन्य ऐतिहासिक व्याख्या का स्वरूप भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में स्थापित होता दिखता है।

वास्तव में यह सम्पूर्ण घटनाक्रम इस बात की तरफ इशारा करता है कि इसने सम्पूर्ण भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की प्रकृति को ही बदल दिया। इस बदलाव के लिये स्वाभाविक रूप से चौरी–चौरा का घटनाक्रम तथा असहयोग वापसी दोनों ही संदर्भ अत्यंत ही महत्वपूर्ण हैं। इतिहास लेखन के समय हम इस बात से इंकार नहीं कर सकते हैं कि असहयोग के स्थगित होने के बाद भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के नेतृत्व में थोड़े समय के लिये शून्य की स्थिति पैदा हो गई थी। जनता में क्रांतिकारी उत्साह था परन्तु शीर्ष नेतृत्व को राष्ट्रीय भावना के कमजोर होने का भय सताने लगा था। उन्हें ऐसा लगने लगा था कि कहीं यह राष्ट्रीय आंदोलन दिशाहीन न हो जाए, ऐसे में मोतीलाल नेहरू, चितरंजन दास की सक्रियता ने उत्साह और नवजीवन का संचार किया। निर्भीकतापूर्वक सरकार का विरोध होता रहा।[10] चौरी–चौरा की घटना और असहयोग आंदोलन की वापसी के बाद के घटना क्रम के कारण ही स्वराजवादी व्यवस्थापिकाओं में जा सके और सरकार की कमजोरियों को जनता के सामने लाने में सफल भी रहे। स्वराजवादियों के नेतृत्व में ही सरकार के कार्यक्रमों को आम जनमानस द्वारा आलोचित किया जाने लगा था। इस सम्पूर्ण घटना क्रम का समेकित प्रभाव यह था कि अब आम भारतीय जनमानस वैचारिक चैतन्यता के साथ ही क्रियात्मक स्तर पर भी स्वतंत्रता आंदोलन के निमित्त आजादी पाने हेतु एक नई मजबूत पृष्ठभूमि तैयार करने में सफल हो रहा था।

संदर्भ सूची

1. कुशवाहा, सुभाष चन्द्र. चौरी–चौरा विद्रोह और स्वाधीनता आंदोलन. नई दिल्ली : पेंगुईन बुक्स प्रा0लि0. 20140. पृ0 151
2. अमीन, शाहिद, पांडेय ज्ञानेंद्र. निम्न वर्गीय प्रसंग–2. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन. 2002. पृ0 177
3. चन्द्र, बिपिन. भारत का स्वतंत्रता संघर्ष. दिल्ली : हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय. 1998. पृ0 140
4. वही, कुशवाहा, सुभाष चन्द्र. पृ0 218
5. वही, कुशवाहा, सुभाष चन्द्र. पृ0 216–218
6. बंद्योपाध्याय, शेखर. पलासी से विभाजन तक. नई दिल्ली : ओरियंट बैल्क स्वॉन प्रा0लि0. 2007. पृ0 330
7. अमीन, शाहिद. इवेंट, मेटाफर, मेमरी : चौरा–चौरा, 1922–1992. दिल्ली : ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस. 1945. पृ0 47–50
8. वही, चन्द्र, विपिन. पृ0 144
9. सरकार, सुमित. आधुनिक भारत. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन. 1993. पृ0 247–148
10. वही, सरकार, सुमित. पृ0 245–248